प्रातः क्लास ओमशान्ति 27-8-67

रिकार्ड :- जाग सजनियाँ जाग:- ओमशान्ति। रूहानी बच्चों ने शरीर के द्वारा यह गीत सुना। किस ने सुना? आत्मा ने। क्योंकि बाप अब बच्चों को आत्माभिमानी बना रहे हैं। तुमको आत्मा को भी ज्ञान मिलता है। दुनियाँ में एक भी मनुष्य नहीं जिसको आत्मा का ज्ञान हो। तो फिर परमपिता परमात्मा का ज्ञान हो कैसे सकता है। आत्मा जानती है हम कहाँ के वासी हैं, हम किसके बच्चे हैं। अभी तुम यथार्थ रीति जानते हो। हम आत्मा में कैसे 84 जन्मों का पार्ट नूँधा हुआ है। यह और कोई मनुष्य मात्र नहीं जानते। कैसे पार्ट नूँधा हुआ है। सब एक्टरस पार्टधारी हैं। भिन्न2 धर्म की आत्मायें कब2 आती हैं, तुम्हारी बुद्धि में है। बाप डिटेल नहीं समझाते हैं। मुख्य होल सेल समझाते हैं। होल सेल किसको कहा जाता है, एक सेकन्ड में ऐसा समझानी देते हैं जो सतयुग आद से लेकर अंत तक सब मालूम पड़ जाता है। कैसे हमारा पार्ट नूँधा हुआ है। अभी तुम जानते हो बाप क्या है। उनका भी पार्ट इस ड्रामा के अन्दर क्या है। यह भी जानते हैं ऊँच ते ऊँच बाप है। सर्व का सदगति दाता भी वह ही है। दुःख हर्ता सुख कर्ता भी है। शिव जयन्ती गाई हुई है जरूर कोई शिव जयन्ती सबसे ऊँच है। खास भारत में ही जयन्ती मनाते हैं। जिस2 की राजाई में जिस ऊँच पुरुष की पार्ट की हिस्ट्री अच्छी होती है तो उनकी स्टैम्प्स भी बनाते हैं। अब शिव की जयन्ती भी मनाते हैं, समझना चाहिए सबसे ऊँच जयन्ती किसकी हुई। किसकी स्टैम्प्स बनानी चाहिए। यह भी पत्थर बुद्धि समझते नहीं हैं। कोई साधु सन्त अथवा सिक्खों का, वा मुसलमान, वा अंग्रेजों का कोई मिलाप अच्छा हो गया है तो उनकी स्टैम्प्स बनाते रहते हैं। जैसे राणा प्रताप आद का भी बनाते रहते हैं। वास्तव में स्टैम्प्स होना चाहिए बाप की। जो सब का सदगति दाता है। इस समय बाप न आवे तो सदगति कैसे हो। क्योंकि सब रौरव नर्क में गोता खाते रहे हैं। जिसकी भी जयन्ती मनाते हैं सब नर्क में हैं। सबसे ऊँच ते ऊँच है शिव बाबा पतित पावन। मंदिर भी शिव के बहुत ऊपर 2 ही बनाते हैं। क्योंकि ऊँच ते ऊँच है ना। बाप ही आये भारत को स्वर्ग का मालिक बनाते हैं। जब वह आते हैं तब सब की सदगति करते हैं। तो उस बाप की ही याद रहनी चाहिए। स्टैम्प्स भी शिव बाबा का कैसे बनावें। भक्ति मार्ग में तो लिंग बनाते हैं। वह है ऊँच ते ऊँच आत्मा ठहरी। ऊँच ते ऊँच मंदिर भी शिव का ही मानेंगे। सोमनाथ शिव का हो मंदिर है ना। भारत वासी तमोप्रधान होने कारण यह भी नहीं जानते कि शिव कौन है? इस समय भक्ति भी तमोप्रधान है। जिसकी पूजा आद करते हैं उसकी आक्यूपेशन आद नहीं जानते। राणा प्रताप ने भी लड़ाई की। वह तो हिंसा हो गई। उनकी तो स्टैम्प्स बनानी न चाहिए। इस समय तो सब हैं हिंसक। शिकार में जाना, काम कटारी चलाना यह भी हिंसा है। डबल अहिंसक तो यह (ल. ना.) हैं। मनुष्यों को जब पूरा ज्ञान हो तब अर्थ सहित स्टैम्प्स निकालें। सतयुग में स्टैम्प्स निकलती होंगी तो इन लक्ष्मी नारायण की है। शिव बाबा का ज्ञान तो वहाँ रहता नहीं। तो जरूर ऊँच ते ऊँच लक्ष्मी नारायण की ही स्टैम्प्स निकलती होंगी। अब भी भारत का यह स्टैम्प्स होना चाहिए। ऊँच ते ऊँच स्टैम्प्स है त्रिमूर्ति का। वह तो अविनाशी रहना चाहिए। क्योंकि भारत का अविनाशी राज्य दे देते हैं। परमपिता परमात्मा ही आये भारत को स्वर्ग बनाते हैं। तुम्हारे में भी बहुत हैं जो यह भूल जाते हैं। बाबा हमको स्वर्ग का मालिक बनाते हैं, यह माया भूला देती है। बाप को न जानने कारण भारत कितनी भूलें करती आई है। बाप खुद कहते तुम भारतवासी मुझे कितनी गाली देते आये हो। बिल्कुल ही वर्थ नाट अ पेनी इनसालवेन्ट बन पड़े हो। जब ऐसी हालत होती है तब ड्रामा अनुसार मुझे रहम आता है। कहते हैं ना रहम करो। भारत पर खास रहम करते हैं। पार्ट से स्वर्ग की बादशाही दे देते हैं। भारतवासियों को ही खास उनकी याद है। शिव बाबा याद करते हैं। यह किसको भी पता नहीं है। शिव जयन्ती का भी अब नहीं जानते हैं। बिल्कुल ही एडियट बुद्धि हैं। यह नॉलेज सिवाए बाप के और कोई को नहीं। ऋषि मुनि कहते थे नेती2 अर्थात् हम नहीं जानते। अभी तुम बच्चों को बाप समझाते हैं तुम औरों पर भी रहम करो। जिन्होंने ऊपर भी आप ही रहम करो। फिर टीचर पढ़ाते हैं यह भी रहम करते हैं ना। वह भी कहते हैं मैं टीचर हूँ। तुमको

पढ़ाता हूँ। शिक्षा देता हूँ। वास्तव में इसका नाम पाठशाला भी नहीं कहेंगे। यह तो बहुत बड़ी युनिवर्सिटी है। गाड फादरली विश्व विद्यालय। शिव बाबा सारी विश्व को सदगति देते हैं। तो सच्ची2 युनिवर्सिटी है ना। बाकि तो सब हैं झूठे नाम। वह कोई युनिवर्सिटी का नालेज तो है नहीं। युनिवर्सिटी है ही बाप की। जो सारे विश्व का सदगति करते हैं। वास्तव में युनिवर्सिटी एक ही है। इन द्वारा हो सब मुक्ति जीवन मुक्ति में जाते हैं। अर्थात् शांति और सुख को प्राप्त करते हैं। युनिवर्स तो यह हुई ना। इसलिए बाबा कहते हैं डरो मत। यह समझने की बात है। ऐसे भी हुआ है। इमरजैंसी के टाईम में कोई किसकी सुनते भी नहीं। क्योंकि प्रजा का प्रजा पर राज्य है। पत्थर बुधि यह भी नहीं जानते यह कोई सालिस्टी नहीं है। प्रजा का प्रजा पर राज्य अभी ही होता है। पहले राजाई चलती है अंत में प्रजा का प्रजा पर राज्य होता है। और कोई धर्म में शुरू से राजाई नहीं चलती। वह तो धर्म स्थापन करते हैं। फिर जब लाखों के अन्दाज़ में होते हैं तब राजाई कर सकते। यहाँ तो बाप राजाई स्थापन कर रहे हैं। युनिवर्स के लिए। यह भी समझने की बात है। दैवी राजधानी इस पुरुषोत्तम संगम युग पर स्थापन हो रही है। तब बाबा ने समझाया था कृष्ण नारायण, राम आदि के काले चित्र भी तुम हाथ में उठाओ। फिर समझाओ कृष्ण को श्याम-सुन्दर क्यों कहते हैं। सुन्दर था फिर श्याम कैसे बनते हैं, भारत भी हैविन था, अभी हैल है। हैल अर्थात् काला। हैविन है गोरा। राम राज्य को दिन कहा जाता, फिर रावण राज्य को रात कहा जाता। तुम तो समझा सकते हो। देवताओं को काला क्यों बनाया है। कृष्ण को दिखाते हैं सर्प पर डांस किया फिर यह हुआ। यह तो है ही सफेद झूठ। यह तुम बैठ समझाते हो। तुम हो अभी पुरुषोत्तम संगम युग पर। वह नहीं है। तुम तो यहाँ बैठे हो ना। यहाँ तो हो ही संगम युग पर। पुरुषोत्तम बनने तुम पुरुषार्थ कर रहे हो। कनिष्ठ शुद्र मनुष्यों से तुम्हारा कोई कनेक्शन है नहीं। हाँ अभी कर्मातीत अवस्था न हुई है इसलिए मित्र सम्बन्धियों से भी दिल लग जाती है। कर्मातीत बनना इसके लिए है याद की यात्रा। बाप समझाते हैं तुम आत्मा हो। तो बाप के साथ कितना लव होना चाहिए। जो हो बाबा हमको पढ़ाते हैं। वह उमंग कोई में रहता नहीं। माया घड़ी2 देहाभिमान में लाए देती है। जब कि समझते हो शिव बाबा हम आत्माओं से बात करते हैं तो वह खुशी रहनी चाहिए। वह कशिश रहनी चाहिए। सुई पर ज़रा भी कट न होगी। वह चकमक की आग तो तुम रखेंगे तो पट से चटक जावेंगे। थोड़ी भी कट होगी तो चटकेंगे नहीं। कशिश नहीं होगी। जहाँ से कट होगा फिर वहाँ से चकमक खैंचेगी। बच्चों में भी कशिश तब होगी जब याद की यात्रा पर होंगे। कट होगी तो खैंच न सकेंगे। हरेक समझ सकते हैं हमारी सुई बिलकुल प्योर हो जावेगी तो कशिश भी होगी। कशिश नहीं होती क्योंकि कट चढ़ी हुई है। तुम बहुत याद में रहते तो विकर्म भस्म होते हैं। अच्छा अगर कोई पाप करते हैं तो और डो सौना हो जाता है। कट चढ़ जाती है। याद नहीं करते। बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो फिर याद भूलने से कट चढ़ जाती है। तो वह कशिश लव नहीं रहता। कट उतरे हुये होंगे तब लव होगा। खुशी भी रहेगी। चेहरा खुश नमा रहेगा। तुमको भविष्य में ऐसा खुश नमा बनना है। सर्विस नहीं करते तो पुराने छिरे हुये बातें करते रहते। बाप से बुद्धि योग ही तोड़ाये देते हैं। आकर्षण कुछ थी वह भी गुम हो जाती। बाप से ज़रा भी लव नहीं। लव उनका रहेगा जो अच्छी रीत याद करते होंगे। बाप को भी उसकी कशिश होगी। यह बच्चा सर्विस भी करते हैं, योग में भी रहते हैं। तो बाप का प्यार रहता है। अपने उपर ध्यान रखते हैं हम से कोई पाप तो नहीं होता। अगर याद न करेंगे तो कट कैसे उतरेगी। बाप कहते हैं अपना चार्ट बनाओ। तो कट उतर जावेगी। तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है। कट उतरनी चाहिए। उतरती भी है फिर चढ़ती भी है। सौना डनड पड़ जाता है। बाप को याद न करते हैं तो कुछ न कुछ पाप होता रहता है। बाप को भूल कुछ न कुछ पाप कर लेते हैं। बाप कहते हैं कट उतरने बिगर तुम आ न सकेंगे। नहीं तो फिर बहुत सज़ा खानी पड़ेगी। मोचरा भी

फिर पद भी भ्रष्ट हो जावे बाकि बाप से वर्सा पा लिया। ऐसा कर्म न करना चाहिए। जो और ही कट चढ़ जावे। पहले तो अपनी ही कट उतारने का ख्याल रखो। नहीं करते हैं तो फिर बाप समझेंगे इनके तकदीर में न है। क्वालिफिकेशन चाहिए। अभी भरत की कैरेक्टर कहते हैं। तो यह काले चित्र मुंह में देना चाहिए। समझाने की कोई में हिम्मत नहीं आती। क्योंकि बाप को पूरा याद नहीं करते। जो सुई साफ हो। लक्ष्मी नारायण के कैरेक्टर तो बिल्कुल ही क्लियर हैं। उन्हों के आगे अपना कैरेक्टर खुद क्लियर करते हैं। शिव बाबा को जानते ही नहीं। सद्गति करने वाला तो वह ही है। सन्यासियों के पास जाते हैं परन्तु वह तो और ही दुर्गति करने वाले हैं। सर्व सद्गति दाता एक ही है। बाप ही स्वर्ग की स्थापना करते हैं। फिर तो नीचे दुर्गति में उतरना ही है। बाप सिवाय कोई पावन बन न सके। गुफे में अन्दर जाये बैठते हैं। इन से तो गंगा में जाये बैठे तो साफ हो जावे। क्योंकि पतित पावन गंगा कहते ना। दुनिया में मनुष्य शान्ति चाहते हैं? वह तो जब घर जावेंगे तब पार्ट पूरा होगा। हम आत्माओं का घर है ही निर्वाण धाम। यहाँ शान्ति कहाँ से आई। तपस्या करते हैं वह भी कर्म करते हैं ना। शान्ति में कर के बैठ जावेंगे। शिव बाबा को तो जानते ही नहीं। यह सब है भक्ति मार्ग। पुरुषोत्तम संगम युग एक ही है। जब कि आते हैं। आत्मा स्वच्छ बन मुक्ति में चली जाती है। जो मेहनत करेंगे वह राज्य करेंगे। बाकि जो मेहनत न करते वह अच्छी रीत पादर खाते रहेंगे। शुरू में साक्षात्कार कराया था। सजाओं का। फिर पिछाड़ी में भी साक्षात्कार होगा। देखें हम श्रीमत पर न चले तब यह हाल हुआ। बच्चों को कल्याण करना है। बाप और रचना का परिचय देना है। जैसे घासलेट में डालने से कट उतर जाती है वैसे बाप की याद में रहने से भी कट उतर जावेगी। नहीं तो वह कशिश नहीं, लव नहीं रहता। बाप में लव सारा चला जाता है मित्र सम्बन्धियों में। अक्ल सारा चट हो जाता है। मित्र सम्बन्धियों पास जाये रहते हैं कहाँ वह कट खाया हुआ संग, कहाँ वह कट खाई हुई चीज की संग में उनको भी कट चढ़ जाती है। चलन ठीक नहीं रहती। तो कट उतरती ही नहीं। कट उतारने लिए ही बाप आते हैं। याद से ही पावन बनेंगे। आधा कल्प से बड़ा कट चढ़ा हुआ है। अब बाप ब्रह्मा मुख कहते हैं मुझे याद करो। बुद्धि का योग जितना मेरे साथ होगा उतना कट उतरेगी। नई दुनिया तो बननी ही है। सतयुग में पहले बहुत छोटा झाड़ होता है। देवी देवताओं का। फिर वृद्धि को पाती है। यहाँ से ही तुम्हारे पास आये कर पुरुषार्थ करते रहते हैं। ऊपर से कोई नहीं आते हैं। जैसे और धर्म वालों का ऊपर से आते हैं वहाँ। नहीं यहाँ तुम्हारी राजधानी तैयार हो रही है। फिर सब चले जावेंगे। फिर नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार आवेंगे। सारा मदार पढ़ाई पर, बाप की श्रीमत चलने पर है। यहाँ रहे पड़े हैं बाहर का ढंग न है। परन्तु बहुतों का बुद्धि योग बाहर जाता रहता है। तो वह भी कट लग जाती है। यहाँ आते हैं तो जीते जी खतम कर आते। हिसाब किताब चुक्तु। सन्यासि भी भल सन्यास करते हैं फिर भी वह सब याद आता रहता है। कितने समय तक। तुम बच्चे समझते हो वह सब है कलियुगी संग। अभी हमको सतयुग का संग मिलता है। हम अपने बाप श्री की ही याद में रहते हैं। मित्र सम्बन्धि आद को जानते तो है ना। गृहस्थ व्यवहार में रहते कर्म करते बाप को याद करते हैं। पवित्र बनना है और को भी सिखाना है। फिर तकदीर में होगा तो तीर लगेगा। ब्राह्मण कुल का ही नहीं होगा तो देवता कुल में कैसे आवेगा। यहाँ ही देखने में आता है। बहुत हज पाइन्टस दी जाती हैं। जो झट किसकी बुद्धि में बैठ जायें? विनाश काले विप्रीत बुद्धि का चित्र भी क्लियर है। अभी साबरन्टी तो है नहीं। दैवी सावरन सालवेन्ट थी। जिसको स्वर्ग कहा जाता था। अभी तो पंचायती राज्य है। समझाने में कोई हर्जा नहीं। परन्तु कट निकले हुए हो तब किसको तीर लगे। पहले कट निकालने की कोशिश करनी चाहिए। अपना कैरेक्टर देखना है। रात दिन हम क्या काम करते हैं। किचन में भी भोजन बनाते, रोटी पकाते जितना हो सके याद रहे। घूमने जाते हो तो भी याद में। बाप सभी की अवस्था को तो जानते हैं ना। कोई तो हार भई जीत भई जैसे करते हैं। फिर कट और ही चढ़ जावेगी। बाप कहते हैं हियर नो इविल। कपड़े की कोई बात मत सुनो।

[illegible]